International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 04-07-2025, Accepted: 03-08-2025, Published: 18-08-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 126-129

हिंद–प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा के लिए भारत–चीन संबंधों का एक मूल्यांकन

आतिश कुमार सरोज[1], प्रशान्त अग्रवाल[2]
[1] शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] प्रोफ़ेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
विश्व के 60: से अधिक समुद्री व्यापार का इस क्षेत्र से होकर गुजरना और भू–रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता के केंद्र के रूप में कार्य करने के कारण हिंद–प्रशांत क्षेत्र (जो हिंद महासागर एवं प्रशांत महासागर में फैला हुआ है) एक महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक रंगमंच बना हुआ है। इस अध्ययन में हिंद–प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा की गतिशीलता की जांच की गई है, जिसमें दो शक्तिशाली उभरते राष्ट्र भारत और चीन के बीच बदलती गतिशीलता पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह क्वाड और आसियान जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों में उनकी अपनी भागीदारी के साथ–साथ उनके रणनीतिक लक्ष्यों, नौसेना के आधुनिकीकरण एवं समुद्री नीतियों की भी जांच करता है। जिसमे भारत की 2015 की सामुद्रिक सुरक्षा रणनीति और चीन के 2019 के रक्षा श्वेत पत्र जैसे सरकारी नीति जैसी प्राथमिक सामग्रियों के अलावा अकादमिक पत्रिकाओं एवं थिंक टैंक जैसे माध्यमिक स्रोतों से परामर्श करता है। जिसके परिणाम दर्शाते हैं कि चीन का बलपूर्वक समुद्री विस्तार जिसमे विशेष रूप से बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से और भारत का एक्ट ईस्ट पॉलिसी के माध्यम से प्रतिसंतुलन रणनीति, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) जैसे हॉटस्पॉट में एक गतिशील प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र बन गई है। हालांकि यहाँ पर अवैध मछली पकड़ने, समुद्री डकैती और जलवायु से संबंधित समुद्री खतरों सहित आम मुद्दों के कारण सहयोग के अवसर भी उपलब्ध हैं। इस लेख में क्षेत्रीय गठबंधनों और नौसैनिक असंतुलन के परिणामों की जांच की गई है तथा तनाव बढ़ने के खतरों के परिणाम को कम करने की प्रक्रियाओं की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। यह बहुपक्षीय सहयोग, द्विपक्षीय चर्चाओं और विश्वास–निर्माण पहलों के माध्यम से स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत सुझावों के साथ समाप्त होता है। इसका लक्ष्य हिंद–प्रशांत क्षेत्र मे समुद्री वातावरण की सुरक्षा की गारंटी के लिए भारत और चीन के बीच सहयोग और प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन बनाना है।

मुख्य शब्द: सामुद्रिक सुरक्षा, हिंद–प्रशांत क्षेत्र, भारत–चीन संबंध, भू–राजनीति

प्रस्तावना
बढ़ती संचार की समुद्री लाइनों (SLOC) के कारण ऊर्जा प्रवाह संभव हो रहा है और वार्षिक समुद्री व्यापार 5 ट्रिलियन डॉलर से अधिक है इसलिए हिंद–प्रशांत क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक और आर्थिक केंद्र हो चुका है। इस क्षेत्र का समुद्री सुरक्षा वातावरण भारत और चीन के बीच भू–राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता से काफी प्रभावित है, जो उनकी स्वयं की वैश्विक शक्ति बनने की आकांक्षाओं से प्रेरित है। जबकि भारत की एक्ट ईस्ट नीति हिंद महासागर क्षेत्र में एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में है जहां इसकी स्व–घोषित भूमिका चीन के प्रभाव का मुकाबला करने की महत्वाकांक्षा को दर्शाती है। चीन का समुद्री सिल्क रूट जो BRI का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो अपनी ऊर्जा और व्यापार लाइनों की सुरक्षा करने की मंशा रखता है।

Source: Map of the Indo-Pacific (Indonesian Encyclopedia Yizuo Academy, 2022)
Southeast Asian countries that are members of the Association of Southeast Asian Nations

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए, यह अध्ययन जांचता है कि

- भारत और चीन की समुद्री नीतियां हिंद–प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा को कैसे प्रभावित करती हैं?
- भारत और चीन की नीतियां क्षेत्रीय स्थिरता को कैसे प्रभावित करती हैं?
- भारत और चीन के बीच प्रतिस्पर्धी तनाव को कम करने के क्या तरीके हैं?

यह अध्ययन दक्षिण चीन सागर और प्व जैसे हॉटस्पॉट में भारत चीन के संबंधों के साथ–साथ उनके नौसैनिक आधुनिकीकरण और क्वाड जैसे क्षेत्रीय गठबंधनों पर नज़र डालता है एवं उनके द्विपक्षीय संबंधों की कमज़ोरी, 2020 के गलवान घाटी संघर्ष और उसके बाद की समुद्री स्थिति से उजागर होती है। समुद्री डकैती और जलवायु परिवर्तन जैसी गैर–पारंपरिक चुनौतियों का मुकाबला करने में समान हितों के कारण और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा के प्रभुत्व के बावजूद इनकें बीच सहयोग की संभावना है। इस अध्ययन मे प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के द्वारा जाँच करके तनाव को रोकने और सहकारी समुद्री व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सहकारी गश्त और चर्चा जैसी विश्वास–निर्माण रणनीतियों की आवश्यकता पर जोर देता है। भारत–चीन प्रतिस्पर्धा को देखते हुए इसके निष्कर्षों का उद्देश्य हिंद–प्रशांत क्षेत्र मे स्थिरता बनाए रखने के लिए अकादमिक और नीतिगत चर्चाओं में योगदान देना है।

विश्व के आधे से अधिक सामुद्रिक व्यापारिक जहाज हिंद–प्रशांत क्षेत्र से होकर गुज़रती है, जो इस क्षेत्र के रणनीतिक महत्व को दर्शाता है। इसकी अपनी भूराजनीतिक स्थिति के कारण इसके महत्ता को ध्यान मे रखते हुए अनेक विद्वानों ने तमाम अलग अलग तरीके से इसकी व्याख्या की है जैसे कि चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव और भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी दो प्रतिस्पर्धी रणनीतिक ढाँचे हैं, जिसे आर डि कपलान (2010) ने हिंद–प्रशांत क्षेत्र को महाशक्ति संघर्ष के रंगमंच के रूप में चित्रित करते हुए उजागर किया है। आर मेडकाफ़ ने 2020 मे उजागर किया कि दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर रिम (IOR) में चीन के नौसैनिक निर्माण से भारत के क्षेत्रीय प्रभुत्व को चुनौती मिल रही है। हर्ष वी पंत (2018) का तर्क है कि ऐतिहासिक सीमा विवादों और समुद्री महत्वाकांक्षाओं में निहित निरंतर विश्वास की कमी, भारत–चीन संबंधों को आकार देती है। हालांकि, ब्रूस्टर (2019) के अनुसार, पर्यावरणीय गिरावट और समुद्री डकैती जैसे गैर–पारंपरिक सुरक्षा जोखिम सहयोग के अवसर प्रदान करते हैं। हिंद–प्रशांत क्षेत्र मे तनाव कम करने में क्वाड और आसियान जैसे बहुपक्षीय ढाँचों की भूमिका को इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस रिसर्च एंड एनालिसिस (2024) ने अपने शोध में उजागर किया गया है, जिसमें यह भी चर्चा की गई है कि ग्वादर और हंबनटोटा जैसे स्थानों में चीनी बंदरगाह निवेश से भारत की सुरक्षा धारणाएँ कैसे प्रभावित हुई हैं। यह आलेख समुद्री सुरक्षा गतिशीलता पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करके इन कार्यों पर आधारित है, जिसमें नौसेना रणनीतियों, मालाबार जैसे क्षेत्रीय अभ्यासों और बंदरगाह कूटनीति में हाल के विकास को एकीकृत किया गया है।

हिंद–प्रशांत क्षेत्र मे भारत और चीन का स्त्रातेजिक महत्व

उभरते देशों के रूप में भारत और चीन हिंद–प्रशांत क्षेत्र के रणनीतिक हित उनकी शीर्ष सुरक्षा और आर्थिक प्राथमिकताओं का प्रतिबिंब हैं। चीन के तेल आयात का 80ः मलक्का जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है, जो एक महत्वपूर्ण चोकपॉइंट है जो विश्व व्यापार का 40ः संभालता है, इसलिए SLOC की सुरक्षा इसकी समुद्री नीति का एक प्रमुख घटक है, जिसका नेतृत्व BRI के समुद्री सिल्क रोड द्वारा किया जाता है। ष्स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल्स'' नीति के तहत, चीन की IOR में रणनीतिक और रसद उपस्थिति क्यौकप्यू (म्यांमार), हंबनटोटा (श्रीलंका) और ग्वादर (पाकिस्तान) जैसे बंदरगाहों में निवेश करके अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के परिणामस्वरूप भारत स्वयं घेरे जाने के बारे में चिंतित है। भारत का मात्रा के हिसाब से 95ः और मूल्य के हिसाब से 68ः व्यापार समुद्र के रास्ते होता है, इसलिए महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्गों पर भारत की रणनीतिक स्थिति हिंद–प्रशांत क्षेत्र में इसके महत्व का सबसे बड़ा कारण है। 130 से ज़्यादा जहाजों और पनडुब्बियों के साथ भारतीय नौसेना हिंद महासागर क्षेत्र की रक्षा करती है। खुले और मुक्त हिंद–प्रशांत क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए भारत QUAD IORA और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन जैसे संगठनों में एक प्रमुख खिलाड़ी है। भारत SAGAR और एक्ट ईस्ट पॉलिसी जैसे कार्यक्रमों के ज़रिए समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और क्षेत्रीय संपर्क को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, यह क्षेत्र में संतुलन बनाए रखता है और सुनिश्चित करता है कि चीन के प्रभाव का मुकाबला करके अंतर्राष्ट्रीय नियमों का पालन किया जाए। जिसमे भारत एक्ट ईस्ट पॉलिसी के माध्यम से एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में अपनी भूमिका को प्राथमिकता देता है और क्वाड के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ संबंध बनाता है, क्योंकि यह IOR को अपने रणनीतिक विकल्प के रूप में देखता है। भारत कि सागरमाला परियोजना एक ऐसी पहल है जिसका उद्देश्य समुद्री बुनियादी ढांचे में सुधार करना है और अंडमान–निकोबार द्वीप समूह में भारतीय नौसेना की मौजूदगी महत्वपूर्ण मार्गों पर उसके नियंत्रण को बढ़ाती है। भारत और चीन कि ये परस्पर विरोधी विचारधाराएँ रणनीतिक स्थानों पर संघर्ष का कारण बनती हैं जहाँ दोनों देश शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं जैसे मलक्का और होर्मुज जलडमरूमध्य पर। जहाँ भारत की सुरक्षा–केंद्रित दृष्टिकोण गठबंधनों का उपयोग करती है, वहीं चीन का आर्थिक–संचालित दृष्टिकोण बुनियादी ढाँचे पर अधिक जोर देता है। तमाम संघर्षों के बावजूद, व्यापार मार्गों को पर्यावरणीय खतरों और समुद्री डकैती से बचाने में साझा हितों के कारण चर्चा की गुंजाइश है। वे स्थिर हिंद–प्रशांत समुद्री व्यवस्था के लिए अपने उद्देश्यों में समन्वय स्थापित कर सकते हैं तथा इरादों को स्पष्ट करने के लिए द्विपक्षीय प्रक्रियाएं स्थापित करके गलतफहमियों को कम कर सकते हैं।

नौसैनिक क्षमताएं और आधुनिकीकरण

भारत और चीन की नौसैनिक क्षमताएं हिंद–प्रशांत क्षेत्र में उनकी रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं को रेखांकित करती हैं। दुनिया में सबसे बड़ा बेड़ा चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी फ्लीट (PLAN) है, जिसमें 350 से ज़्यादा जहाज़ हैं, जिनमें तीन विमानवाहक पोत (लियाओनिंग, शांडोंग और फुज़ियान) और अत्याधुनिक टाइप 055 विध्वंसक शामिल हैं। परमाणु पनडुब्बियों और हाइपरसोनिक मिसाइलों द्वारा समर्थित, इसकी एंटी–एक्सेस/एरिया डिनायल (A2/AD) क्षमताएँ IOR में अपने प्रभाव का विस्तार करने और दक्षिण चीन सागर में बाहरी देशों को हतोत्साहित करने की कोशिश करती हैं। भारत की नौसेना में लगभग 140 जहाज हैं, जिनमें अरिहंत श्रेणी की परमाणु पनडुब्बियां और विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत और विक्रमादित्य शामिल हैं। भारत की समुद्री क्षमताओं में घरेलू जहाज निर्माण में निवेश के माध्यम से सुधार किया जा रहा है, जिसमें विशाखापत्तनम श्रेणी के विध्वंसक जहाजों और समुद्री निगरानी उपकरणों का निर्माण भी शामिल है। भारत को चीन के वर्चस्व को संतुलित करने के लिए क्वाड जैसे गठबंधनों पर निर्भर रहना चाहिए, क्योंकि बेड़े के आकार में असमानता के कारण चीन की नौसेना 2.5 गुना से अधिक बड़ी है। जिबूती के करीब चीन की तैनाती और भारत का मालाबार

अभ्यास हाल के अभ्यास हैं जो उनकी प्रतिस्पर्धी मुद्रा को प्रदर्शित करते हैं। तनाव इसलिए बढ़ रहा है क्योंकि चीन भारत के गठबंधनों को अपने ऊपर रोकथाम के उपाय के रूप में देख रहा है। जबकि, समुद्री डकैती से SLOC की रक्षा करना और समुद्री सुरक्षा बनाए रखना दोनों देशों की प्राथमिकता है। हिंद–प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा को बेहतर बनाने तथा विवादित जल क्षेत्र में निर्णय में त्रुटि की संभावना को कम करने के लिए अपनी नौसैनिक क्षमताओं का उपयोग करके, समन्वित गश्त या अवैध गतिविधि पर सूचना के आदान–प्रदान जैसे सहयोगात्मक प्रयासों से विश्वास को बढ़ावा मिल सकता है।

तनाव के मुख्य बिन्दु

हिंद–प्रशांत क्षेत्र के समुद्री आकर्षण का केंद्र भारत और चीन के बीच प्रतिस्पर्धी प्रकृति को रेखांकित करते हैं। दक्षिण चीन सागर चिंता का प्रमुख विषय बना हुआ है, क्योंकि चीन अपने सशस्त्र बल द्वारा मानव निर्मित द्वीपों और नाइन–डैश लाइन का उपयोग व्यापक दावों को बनाए रखने के लिए कर रहा है। 200 से अधिक तट रक्षक जहाज इन गतिविधियों का समर्थन कर रहे हैं, जो अंतर्राष्ट्रीय मानकों के विरुद्ध हैं, जैसे कि स्थायी मध्यस्थता न्यायालय का 2016 का निर्णय, जिस पर चीन विवाद करता है। भारत इस क्षेत्र में प्रत्येक वर्ष क्वाड साझेदारों के साथ दस से अधिक संयुक्त नौसैनिक अभ्यास करके नौवहन की स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है, हालांकि वह इसका दावेदार नहीं है। हिंद महासागर क्षेत्र में, पाकिस्तान, जिबूती और श्रीलंका में चीन के बंदरगाह निवेश तथा PLAN की तैनाती के कारण नई दिल्ली को सामरिक घेरेबंदी की चिंता हो रही है। भारत ने 2020 के गलवान घाटी संघर्ष जिसमें 20 भारतीय और अनिर्दिष्ट संख्या में चीनी सैनिकों की जान चली गई थी और बढ़ती समुद्री शत्रुता के कारण भारत ने जवाब में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के आसपास गश्त बढ़ा दी थी। खासकर मलक्का जलडमरूमध्य जैसे इलाकों में जो दुनिया के कुल व्यापार का 25ः हिस्सा संभालते हैं, गलत फैसलों की वजह से और ज्यादा तनावपूर्ण हो सकते हैं। चीन की द्विपक्षीय वार्ता की प्रवृत्ति के विरोध में भारत द्वारा आसियान और पश्चिमी देशों को समर्थन दिए जाने से रणनीतिक मतभेद बढ़ गए हैं। 2018 के भारत–चीन सीमा समझौते जैसे प्रभावी मॉडल का उपयोग करते हुए दोनों देशों को महत्वपूर्ण समुद्री क्षेत्रों में जोखिम कम करने, तनाव को नियंत्रित करने और शांति बनाए रखने के लिए समुद्री हॉटलाइन और सहकारी गश्त प्रणाली स्थापित करनी चाहिए।

सहयोग के अवसर

भारत और चीन के लिए हिंद–प्रशांत क्षेत्र में गैर–पारंपरिक समुद्री सुरक्षा मुद्दों को हल करने के लिए मिलकर काम करने के कई अवसर हैं। सामान्य मुद्दों में समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ना और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव शामिल हैं, जिसमें 2030 तक समुद्र के बढ़ते स्तर से तटीय बुनियादी ढांचे के 30ः तक नष्ट होने का खतरा भी शामिल है। 2008 से अदन की खाड़ी में चीन के 40 अनुरक्षण मिशनों और भारत के 70 गश्ती अभियानों ने समुद्री डाकुओं की घटनाओं में 70ः तक कमी लाने में मदद की है, जो दोनों देशों के समुद्री डाकुओं के विरुद्ध प्रयासों की प्रभावशीलता को दर्शाता है। IORA और आसियान जैसे समूह देशो को समुद्री सुरक्षा, बचाव कार्य और पर्यावरण की रक्षा जैसे मुद्दों पर मिलकर बात करने और सहयोग करने का एक मंच प्रदान करता हैं। आपदा राहत और मानवीय सहायता (HADR) में सहयोगात्मक प्रयास, जैसे कि बंगाल की खाड़ी में आए चक्रवातों के प्रति समन्वित प्रतिक्रिया जिसने 2024 में 10 मिलियन से अधिक लोगों को प्रभावित किया था, आत्मविश्वास को बढ़ावा दे सकता है। तटस्थ जल में भारत–चीन नौसैनिक अभ्यास का एक प्रस्ताव, जिस पर 2024 के IORA शिखर सम्मेलन में चर्चा हुई थी, दोनों देशों के साझा हितों की बढ़ती समझ और सहयोग की संभावनाओं को दर्शाता है। ऐसे कदम जैसे नौसेना की तैनाती की जानकारी साझा करना और अवैध मछली पकड़ने पर डेटा साझा करनाकृजिससे क्षेत्र को हर साल 20 अरब डॉलर का नुकसान होता है —आपसी भरोसा बढ़ाने में मदद कर सकते हैं और रणनीतिक तनाव को कम कर सकते हैं। अगर भारत और चीन इन अवसरों का उपयोग करें, तो वे प्रतिस्पर्धा छोड़कर आपसी सहयोग की दिशा में बढ़ सकते हैं। इससे वे समुद्री सुरक्षा से जुड़ी समान चुनौतियों का मिलकर समाधान कर सकते हैं और हिन्द प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता को मजबूत बना सकते हैं।

नीति अनुशंसाएँ

- इस क्षेत्र मे स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए भारत और चीन को सर्वव्यापी नीतिगत पहलों को लागू करना चाहिए।
- गलतफहमी से बचने और इरादों को स्पष्ट करने के लिए, 2018 भारत–चीन सीमा वार्ता के आधार पर एक द्विपक्षीय समुद्री चर्चा तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए। नौसेना की तैनाती और बंदरगाह निवेश जैसे विवादास्पद विषयों पर नियमित उच्च–स्तरीय बैठकों में चर्चा की जा सकती है।
- गैर–पारंपरिक सुरक्षा क्षेत्रों जैसे HADR और एंटी–पायरेसी गतिविधियों में सहयोग बढ़ाना महत्वपूर्ण है। सहयोगात्मक अभ्यास, जैसे कि 2019 में भारत–चीन HADR अभ्यास, विश्वास और अंतर–संचालनशीलता में सुधार कर सकते हैं।
- IORA और ASEAN जैसे बहुपक्षीय मंचों का सही इस्तेमाल करना जरूरी है ताकि समुद्र में व्यवहार के नियम बनाए जा सकें, जैसे कि दक्षिण चीन सागर के लिए एक आचार संहिता, जिसकी बातचीत 2017 से रुकी हुई है।
- चीन को क्वाड में भारत की भागीदारी को लेकर जो चिंता है और भारत को चीन की "स्टिंग ऑफ पर्ल्स" रणनीति को लेकर जो चिंता है, उन्हें दूर किया जा सकता है अगर दोनों देश नौसैनिक गतिविधियों और बंदरगाहों में निवेश को लेकर पारदर्शिता रखें और ऐसे समझौते सार्वजनिक रूप से घोषित करें।
- चूंकि इस क्षेत्र की 15ः मछलियों पर अवैध मछली पकड़ने और पर्यावरणीय खतरों का असर पड़ रहा है, इसलिए भारत और चीन को समुद्री निगरानी से जुड़े प्रोजेक्ट्स पर मिलकर काम करने पर विचार करना चाहिए। ये कदम, जो दोनों देशों के साझा हितों पर आधारित हैं, भारत और चीन के समुद्री संबंधों को प्रतिस्पर्धा से सहयोग की ओर ले जा सकते हैं। इससे हिंद–प्रशांत क्षेत्र में एक सुरक्षित माहौल बन सकेगा, जो वैश्विक व्यापार और क्षेत्रीय विकास को आगे बढ़ाने में मदद करेगा।

निष्कर्ष

भारत और चीन के बीच सामरिक संबंधों का हिंद–प्रशांत क्षेत्र की समुद्री सुरक्षा पर गहरा असर पड़ता है, क्योंकि दोनों देशों के फैसले और सहयोग इस क्षेत्र की स्थिरता और शांति को सीधे रूप से प्रभावित करते हैं। दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ता तनाव चीन की बी.आर.आई. के माध्यम से समुद्री दबदबा बनाने की कोशिश मे लगा है, जो दुनिया के लगभग 20ः बंदरगाह निवेश को नियंत्रित करता है। वहीं, भारत भी अपनी एक्ट ईस्ट नीति और क्वाड जैसे गठबंधनों के ज़रिए इस प्रभाव को संतुलित करने की कोशिश कर रहा है, जिससे क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और तनाव दोनों बढ़ रहे हैं। चीन का 350 जहाजों वाला नौसैनिक बेड़ा और भारत का 140 जहाजों का बेड़ा एक बड़ी सैन्य असमानता दिखाते हैं, जो दोनों देशों के बीच

रणनीतिक अविश्वास को बढ़ाते हैं। यह अविश्वास 2020 के गलवान संघर्ष जैसी घटनाओं के कारण और गहरा हो गया है। हालांकि समुद्री डकैती, हर साल 20 बिलियन डॉलर के नुकसान वाली अवैध मछली पकड़ना, और जलवायु परिवर्तन जैसे साझा मुद्दे ऐसे क्षेत्र हैं, जहां भारत और चीन के बीच सहयोग की बेहतर संभावनाएं बन सकती हैं। आसियान, IORA और संयुक्त HADR (आपदा राहत और मानवीय सहायता) परियोजनाओं जैसे माध्यमों से बहुपक्षीय सहयोग बढ़ाकर भारत और चीन के बीच विश्वास की कमी को कम किया जा सकता है। इस अध्ययन का मुख्य तर्क यह है कि भले ही चीन और भारत के बीच समुद्री संबंधों में अभी प्रतिस्पर्धा हावी है, लेकिन कुछ खास उपायों के ज़रिए आपसी तनाव को कम किया जा सकता है। जैसेकृसाझा गश्त, समुद्री हॉटलाइन बनाना और नौसेना की गतिविधियों में पारदर्शिता रखना। इससे दोनों देशों के बीच भरोसा बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा, अगर भारत और चीन समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ना और जलवायु परिवर्तन जैसे गैर–पारंपरिक सुरक्षा मुद्दों पर मिलकर काम करें, तो वे हिन्द प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता और शांति को मजबूत कर सकते हैं। आगे के शोध में यह भी समझने की ज़रूरत है कि अमेरिका जैसे अन्य देश और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) से जुड़ी नई तकनीकें भारत–चीन समुद्री रिश्तों को किस तरह प्रभावित कर रही हैं। इससे इस अहम क्षेत्र में सुरक्षा और सहयोग के लिए एक संतुलित और टिकाऊ रास्ता खोजा जा सकेगा।

संदर्भ

1. Brewster D. “India and China at Sea: Competition for Naval Dominance in the Indian Ocean”. Oxford University Press, 2019
2. Kaplan RD. “Monsoon: The Indian Ocean and the Future of American Power”. Random House, 2010.
3. Medcalf R. “Indo-Pacific Empire: China, America and the Contest for the World’s Pivotal Region”. Manchester University Press, 2020.
4. Pant HV. “India and China: The Battle for the Indo-Pacific”. Routledge, 2018
5. Khurana GS. “The ‘Indo-Pacific’ Idea: Origins, Conceptualisations and the Way Ahead,” Journal of Indian Ocean Rim Studies, 2019.
6. People’s Republic of China. “China’s National Defence in the New Era”. State Council Information Office, 2019.
7. Republic of India. “Ensuring Secure Seas: Indian Maritime Security Strategy”. Ministry of Defence, 2015.
8. Government of India. “Indo-Pacific Division Briefs”. Ministry of External Affairsm, 2020.
9. https://www.orfonline.org/research/in-defence-of-the-indo-pacific-concep
10. thttps://www.nbr.org/publication/india-and-the-changing-dynamics-of-the-indo-pacific/